परिशिष्ट

[१]

श्रीबाला चालीसा

श्रीबाला दश-मूर्ति तुम, त्रिपुर-सुन्दरी मात !
भक्तों की रक्षा करे, तव आशीस-प्रताप ।।

जय जय जय त्रिपुरा महरानी ! जय बाला सर्वार्थ-साधिनी ।।
अरुणिम किरण वसन तन-मण्डित । स्वर्णाभा से विग्रह वेष्ठित ।।
एक हाथ में पुस्तक राजे । अक्ष - माल कर एक विराजे ।।
एक हाथ वर - मुद्रा छाजे । अभय दान कर एक विराजे ।।
मस्तक पर शशि-कला सुशोभित । नेत्र-त्रयी अरुणाभा-रञ्जित ।।
मुक्त-माल तव कण्ठ बिराजे । अङ्ग-अङ्ग पर भूषण राजे ।।
आसीना माँ रक्त-कमल पर । निज भक्तों के हृदय धवल पर ।।
सत्त्व-गुणात्मक सत्त्व-भाव की-स्वामिनि! विग्रह चतुर्भाव की ।।
तुम्हीं दश दलों बीच फैलतीं । दश-मयि बाला तुम कहलातीं ।।
तुम्हीं कालिका सङ्कट-नाशिनि ! बगला-मुखी देवि रिपु-नाशिनि ।।
स्वयं षोडशी-रूप भवानी । धूमावति-स्वरूप कल्याणी ।।
तुम भैरवि, मातङ्गी माता । तुम भुवनेश्वरि जन-जन-त्राता ।।
लक्ष्मी-रूप तुम्हीं हो कमला । छिन्न-मस्तिका माता विमला ।।
भगवति! तारा-रूप तुम्हीं हो । माता! ब्रह्म-स्वरूप तुम्हीं हो ।।
माँ भगवति! तुम वाक्-सिद्धिदा । भक्तों की कामना-पूर्णदा ।।
सदा सर्वदा शक्ति-स्वरूपा । अतुल शक्तिदा, बहु बहु-रूपा ।।
मन - कामेश्वरि - रूप भवानी । तीव्रा, वागीश्वरि कल्याणी ।।
बीजेश्वरी, बीज - रूपा तुम । बीजात्मिका, बीज - मूला तुम ।।
बिन्दु-रूप बिम्बाक्षी माता । बीज त्रिकूट भक्त-सुख-दाता ।।
भोग-मोक्ष-प्रद बीज तुम्हारे । कुलेश्वरी, त्रय अक्षर न्यारे ।।
केन्द्र-शक्ति-उत्थान तुम्हीं हो । बुद्धि और मन-ज्ञान तुम्हीं हो ।।
तुमसे यह जग जीवन लेता । और तुम्हीं में है यह जीता ।।
जीकर, लय होता है तुममें । इति प्रवाह की जाना किसने ।।

शब्दाक्षर, चिद्-शक्ति तुम्हीं माँ! सबमें रूप अनेक तुम्हीं माँ ।।
मोक्ष-दायिनी, देव-वन्दिता । ज्ञान, वित्त, यश, बहु-बल-दाता ।।
कुल-कुण्डलिनी-रूप तुम्हीं हो । आद्या, ब्रह्म-स्वरूप तुम्हीं हो ।।
बल प्रदान करतीं माँ बाला । जिनमें बल है, वह हैं बाला ।।
मातु! तुम्हारी त्र्यक्षर-विद्या । नाश करे अज्ञान-कुविद्या ।।
काव्य-वक्तृता-शक्ति-प्रदाता । करतीं पूर्ण कामना माता ।।
अतुल शक्ति भक्तों को देतीं । देवि! वज्र-बाधा हर लेतीं ।।
गुरु-समान नहिं जग में दाता । शङ्कर-सम कोउ नाहिं देवता ।।
कौल - समान न कोऊ योगी । त्रिपुरा - सम उत्कृष्ट न देवी ।।
ब्राह्मी, रौद्री और वैष्णवी – की समष्टि हैं त्रिपुर - सुन्दरी ।।
इच्छा, ज्ञान, क्रिया की स्वामिनि । 'अ-क-थ' पुण्यदा, पाप-नसायिनि ।।
वाक्, काम औ शक्ति-बीज की–अर्थ, धर्म, कामना, मोक्ष की–
स्वामिनि ऋग् , यजु, साम-वेद की । अनहद-नाद, ज्योति तेजस् की ।।
शरण तुम्हारी जो जन आता । भुक्ति, मुक्ति, नव-जीवन पाता ।।
दास तुम्हारा अति मति-हीना । अति कुबुद्धि, अस्थिर मन, दीना ।।
कर अपराध क्षमा कुपुत्र के । कृपा करो माँ त्रिपुर अम्बिके! ।।
जप-पूजन की अमित शक्ति दो । निज चरणों की सतत भक्ति दो ।।

शरणागत निज पुत्र के, क्षमा करहु अपराध ।।
अष्ट-पाश से मुक्त कर, दो निज भक्ति अगाध ।।

❐❐❐

About The Author

Name :- Shri Yogeshwaranand Ji
Mb :- +919917325788, +919410030994
Email ;- shaktisadhna@yahoo.com
Web : www.anusthanokarehasya.com

My dear readers! Very soon I am going to start an E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at shaktisadhna@yahoo.com. Thanks

For purchasing Books contact 9410030994

Some Of the Books Written By Shri Yogeshwarnand Ji

1. **Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi**

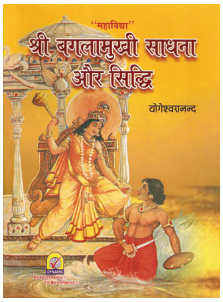

2. **Mantra Sadhna**

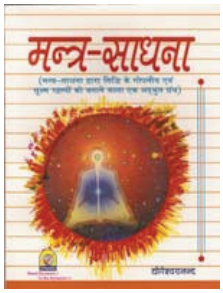

3. **Shodashi Mahavidya**